नर सेवा! नारायण सेवा!

सेवा कार्यो के लिए समर्पित

सेवा अंक

(हिंदी मासिक समाचार)

Website : www.sewabhartimeerutprant.in

अंक 03 माघ फाल्गुन सम्वत 2079 फरवरी 2023

नोएडा द्वारा संचालित सेक्टर 76 में रानी पद्मावती संस्कार केंद्र मकर सक्रांति मनाया गया

सेवा भारती धामपुर नगर द्वारा किशोरी विकास केंद्र पर मकर संक्रांति उत्सव मनाया गया

पीड़ित मानव का हृदय ही असली तीर्थ

फेसबुक: सेवा भारती मेरठ प्रांत ट्विटर : सेवा भारती, मेरठ प्रांत

इंस्टाग्राम : @sevabhartimeerut_ YouTube यूट्यूब : सेवा भारती मेरठ प्रांत

आयकर आयुक्त मेरठ द्वारा आयकर अधिनियम धारा 80 जी के अधीन कर मुक्त PAN : AABTS3018H

SEWA BHARTI MEERUT PRANT ACCOUNT DETAILS

"SEWA BHARTI MEERUT", BANK : “PUNJAB NATIONAL BANK”, SB A/C –“1819000100013417”,

BRANCH : ZEEMKHANA, Meerut , IFSC CODE:- “PUNBO181900”

हमारे सेवा कार्यों के आयाम शिक्षा, चिकित्सा, स्वावलंबन, सामाजिक जागरण

मकर संक्रांति स्पेशल 2023

चांदपुर नगर के मुंढाल गांव में

वैशाली नगर द्वारा संस्कार केंद्र पर

कार्यालय रमतेराम रोड गाजियाबाद पर

जिला धामपुर के नहटौर खंड के ग्राम गिंदोरी में किशोरी विकास केंद्र पर

गौतम बुद्ध नगर ग्रेटर नोएडा संस्कार केंद्र पर

सरस्वती संस्कार केन्द्र गिझोड़, नोएडा में

नूरपुर नगर (धामपुर) में बसंतपंचमी का कार्यक्रम मनाया गया

गायत्री शिक्षा केंद्र बिजनौर नगर बसंत पंचमी का कार्यक्रम

,वैशाली महानगर ने गणतंत्र दिवस के अवसर पर कौशांबी सेंट्रल पार्क में चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया। लगभग 130 बच्चो ने और समाज के लगभग 120 लोगो ने भाग लिया।

हरनंदी नगर में भीम नगर के अंदर चलाए जा रहे संस्कार केंद्र

डॉ रश्मि गुप्ता
प्रान्त मंत्री,
मातृमण्डल सेवा भारती मेरठ प्रांत

किशोरी विकास केन्द्र खोलने की प्रक्रिया

किशोरी विकास केन्द्र का उद्देश्य किशोरियो को सशक्त बनाना है, ताकि वे अपने जीवन की जिम्मेदारी लेने में सक्षम हो सके| सेवा भारती के माध्यम से किशोर लड़कियों के जीवन में परिवर्तन लाना है तथा केन्द्र के द्वारा उन्हें अपनी पूर्ण क्षमता का एहसास करने का अवसर प्रदान करता है।

अब प्रश्न उठता है कि केन्द्र कैसे खोले जायें। तो सर्वप्रथम एक स्थान, मोहल्ला, कॉलोनी में रहने वाली 10 वर्ष से 18 वर्ष तक की बालिकाओं का एक समूह गठित किया जाना चाहिए। यह सेवा भारती के किसी भी कार्यकर्ता या सिलाई केन्द्र की शिक्षिका, संयोजिका द्वारा अपनी देख रेख में गठित करना चाहिए। उसके पश्चात उस समूह के लिए सप्ताह में एक दिन निश्चित करना चाहिए। फिर उसका समय निर्धारित करना चाहिए, तत्पश्चात समूह की संयोजिका व सह संयोजिका का चुनाव सर्व सम्मति से तय करना चाहिए| अब किशोरी विकास केन्द्र का नाम सुनिश्चित करना चाहिए। उदाहरण स्वरूप “ जीजाबाई किशोरी विकास केन्द्र " यह सब निश्चित होने के पश्चात् केन्द्र कहाँ पर संचालित होगा वह स्थान निर्धारित करना होगा, वह कोई मंदिर का प्रांगण हो सकता हैं, किसी किशोरी का आवास हो सकता है, कोई सामुदायिक केन्द्र हो सकता हो, या उसी मोहल्ले में स्थित सेवा भारती का सिलाई या अन्य किसी भी प्रशिक्षण का केन्द्र हो सकता हैं। इसमें बैठक सप्ताह में या 15 दिन में एक बार करनी होगी तत्पश्चात् विषय आता है कि करना कैसे है? तय समय, स्थान, दिन पर सदस्यों का सर्व प्रथम एकत्रीकरण होना चाहिए| भारत माता के चित्र के समक्ष दीप प्रज्जवलन करते हुए, ईश वन्दना या प्रार्थना के साथ बैठक का शुभारम्भ करना चाहिए। संयोजिका एक रजिस्टर या डायरी में सभी सदस्यों के नाम लिखकर बैठक की तिथि व स्थान लिखकर, सभी सदस्यों की उपस्थिति दर्ज कराने का कार्य करेगी।

1. एक से डेढ़ घन्टे की बैठक की समय सारणी निश्चित करनी होगी। प्रार्थना के पश्चात् एक सामूहिक गीत देश भक्ति या चारित्रिक सबलता को पुष्ट करने वाले हो सकते हैं। स्वास्थ्य, शिक्षा, स्वावलम्बन व सामाजिक जागरूकता इन्हीं चारो आयामों से सम्बंधित कोई एक विषय लेकर सदस्यों में आपस में विचार गोष्ठी हो सकती है।
2. समाचार समीक्षा जोकि किशोरियों को वर्तमान जगत में क्या चल रहा है, उससे जागरूक रखने के लिए अति आवश्यक है।
3. संस्कृति, संस्कार, नैतिकता जैसे विषयों पर आधारित संदेश देती हुई कथा या कहानी का वाचन कोई एक सदस्य करें और अगली अन्य सदस्य का नाम, कहानी के लिए इसी बैठक में निश्चित कर है।
4. सामूहिक खेल जो खेल-खेल में प्रेमभाव, सेवा भाव समाज में समरसता का संदेश दे जाये।
5. कोई न कोई कौशल सिखाने का कार्य जैसे पाक कला में कुछ बनाना सीखाना, बेकार वस्तुओं से उपयोगी वस्तुयें बनाना आदि।
6. सेवा भारती कार्यकर्ता किसी न किसी विशेषज्ञ, शिक्षाविद, मनोचिकित्सक, चिकित्सक, वकील, सामाजिक कार्यकर्ता,का प्रवास करवा कर किशोरियों के मन की समस्त आंकाक्षाओं और शंकाओं का समाधान करा सकता है।
7. समय समय पर आने वाले त्योहारों को भी सूक्ष्म रूप में भजन, प्रतियोगिता, रंगोली, नृत्य, नाटय, सामूहिक गान, खान पान द्वारा सजाया, सवारा व मनाया जा सकता है, जिससे किशोरियाँ अपनी संस्कृति से जुड़ी रहे।
8. सुभाषित, राष्ट्र नायिकाओं व महाकाव्यो, महाग्रंथो (रामचरित मानस, वेद पुराण आदि) का ज्ञान देना, अंत में राष्ट्रीय प्रार्थना कर बैठक का समापन करना| यह अभ्यास प्रति सप्ताह सुचारू रूप से चलता रहना चाहिए। *****

अनीता सिंह
उपाध्यक्ष
सेवा भारती मातृ मंडल, मेरठ प्रांत

मकर संक्रांति पर्व

हिंदू धर्म में सूर्य देवता से जुड़े कई प्रमुख त्योहारों को मनाने की परंपरा है। उन्हीं में से एक है मकर संक्रांति सूर्य के मकर राशि में आने पर मकर संक्रांति पर्व मनाया जाता है इस दिन सूर्य देव उत्तरायण हो जाते हैं और देवलोक में दिल का आरंभ होता है। वैसे तो मकर संक्रांति हर साल 14 जनवरी को मनाया जाता है लेकिन पिछले कुछ सालों से गणना में आए कुछ परिवर्तन के कारण इसे 15 जनवरी को भी मनाया जाने लगा है।

हिंदू धर्म में 12 संक्रांतियों में मकर संक्रांति का विशेष महत्व है श्रीमद्भागवत गीता में और देवी पुराण में भी मकर संक्रांति को बेहद शुभ हो बताया गया है। शीत ऋतु के पौष मास में जब भगवान भास्कर उत्तरायण होकर मकर राशि में प्रवेश करते हैं तो सूर्य की इस संक्रांति को मकर संक्रांति कहते हैं इसे पूरे देश में बहुत ही धूमधाम से मनाया जाता है। पूरे भारतवर्ष में मकर संक्रांति को अन्य नामों से भी जैसे तिल संक्रांति, पोंगल, खिचड़ी इत्यादि नामों से भी मनाया जाता है।इस दिन से धरती पर अच्छे दिनों की शुरुआत मानी जाती है धार्मिक मान्यताओं के अनुसार मकर संक्रांति के दिन स्वर्ग का दरवाजा खुल जाता है, इसलिए इस दिन किए गए दान पुण्य को अन्य दिनों में किए गए दान पुण्य से अधिक फलदाई माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि मकर संक्रांति के दिन सुखी तिल तथा कंबल का दान मोक्ष की प्राप्ति करवाता है।

महाभारत काल में भीष्म पितामह ने अपनी देह त्यागने के लिए इसी मकर संक्रांति के दिन को चुना था। श्री मद्भागवत और देवी पुराण के मुताबिक शनि देव का अपने पिता से बैर था। क्योंकि सुर्य देव ने शनि देव और उनकी माता छाया देवी को अपनी दूसरी पत्नी संज्ञा और उनके पुत्र यमराज से भेदभाव करते देख लिया था इस कारण से शनिदेव ने अपने पिता को कुष्ठ रोग का शाप दे दिया था। तब यमराज ने अपने पिता सूर्य देव को कुष्ठ रोग से मुक्ति करने के लिए देवताओं से तपस्या की और सूर्य देव को कुष्ठ रोग से मुक्त कराया। सूर्य देव ने शनि देव से क्रोधित होकर उनके घर कुंभ जिसे शनि की राशि भी कहा जाता है जला दिया था। तब यमदेव ने अपने पिता को समझाया कि वह उनकी सौतेली माता छाया देवी और भाई के साथ कोई बैर ना करें और उनके कल्याण के लिए अपने पिता सूर्य देव को समझाया तब सूरजदेव ने कहा कि जब भी वह शनिदेव के दूसरे घर मकर राशि में जाएंगे तो शनिदेव के घर को धन-धान्य से भर देंगे। तब प्रसन्न होकर शनि महाराज ने कहा कि इस दिन जो कोई भी सूर्य देव की पूजा करेगा उसे शनि की दशा में कष्ट नहीं भोगना पड़ेगा।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की दृष्टि से भी मकर संक्रांति का विशेष महत्व है। भारतवर्ष में संघ परिवार के सभी अनुषांगिक संगठनों पर इसे बहुत ही धूमधाम से सपरिवार मनाया जाता है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनुषांगिक संगठन मातृ मंडल सेवा भारती नोएडा महानगर और नोएडा विभाग में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी मकर संक्रांति को बहुत ही धूमधाम से अपने सभी केंद्रों पर मनाया और प्रसाद में खिचड़ी तिल रेवड़ी, तिलकुटा, बाटा साथ ही साथ उनके परिवार को भी इस मकर संक्रांति के त्योहार में शामिल किया और उनकी माताओं को कंबल बांटे। सभी केंद्रों पर प्रसाद वितरण किया और कंबल वितरण किए। बच्चों को मकर संक्रांति का महत्व समझाया और उनके साथ अनेक प्रकार के खेल खेलकर उनके इनको बहुत ही रोमांचकारी बनाया। मातृ मंडल सेवा भारती के सभी केंद्रों पर सामाजिक समरसता के चलते सभी त्यौहार उत्सव बहुत ही धूमधाम से मनाए जाते हैं तथा सेवा केंद्रों पर बच्चों के साथ-साथ उनके परिवारों को भी सभी उत्सव और त्योहारों में शामिल किया जाता है। ******

देवी नंदा
प्रांत संयोजिका पूर्णकालिक
सेवा भारती, मात् मंडल मेरठ प्रांत

भारतीय संस्कृति और पाश्चात्य संस्कृति में अंतर

आज भारतीय समाज अपना पहनावा खानपान रीति रिवाज भूल रहा है तो इसका मूल कारण पाश्चात्य संस्कृति और इसका प्रभाव ही है। हम पश्चिमी देशों के तौर तरीके अपनाने की होड़ में लगे हैं और हम अपनी 6000 वर्ष पुरानी सभ्यता और संस्कृति को भूलते जा रहे हैं हमें समय रहते संभल जाना चाहिए और अपनी संस्कृति को बचाने का प्रयत्न करना चाहिए। भारतीय संस्कृति आध्यात्मिक प्रधान संस्कृति है जबकि पाश्चात्य संस्कृति भोगवादी संस्कृति है। प्राचीन समय से ही भारतीय संस्कृति में विश्वास, आस्था, भावना, धर्म, रीति-रिवाजों का महत्व रहा है। धर्म प्रधान संस्कृति होने के कारण परंपरागत दृष्टिकोण के तहत हम आध्यात्मिक दर्शन को लेकर पुराने समय की विचारधारा का गुणगान करते हैं। लेकिन आज की जो युवा पीढ़ी है इस वैज्ञानिक युग का मूल्यांकन करती है 21वीं सदी में पांचवीं सदी को जारी रखा जा सकता है जहां विज्ञान मानव क्लोन बनाकर ईश्वर की सत्ता को चुनौती दे रहा है। लेकिन दूसरी तरफ प्रेम विवाह, अंतरजातीय विवाह जैसे मामलों में वृद्धि हुई है विशेषकर महिलाओं के व्यक्तित्व के विकास में शिक्षा के प्रचार में उन्हें अधिक महत्वाकांक्षी और आत्मविश्वास ही बनाया है। शैक्षिक और आर्थिक दृष्टि से आप निर्भर महिलाएं पुरुषों के समान अधिकार प्राप्त करने लगी है। समस्या सबसे बड़ी यह है कि पाश्चात्य करण को आधुनिकीकरण की प्रक्रिया समझने लगे हैं जबकि यह भूल है।

पाश्चात्य संस्कृति का अनुकरण करने की होड़ में हम अपनी भाषा संस्कृति कला रहन-सहन साहित्य को भूल गए हैं। संयुक्त परिवार अब नहीं रहे उनका रूप अब एकाकी परिवार ने ले लिया है पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण अनुचित है इसी कारण आज आवश्यकता है भारतीय संस्कृति की परंपराओं को सहेज कर रखने के साथ-साथ पाश्चात्य संस्कृति के आधुनिक मूल्यों को आत्मसात करने की। पारंपरिक आधुनिकता को आधार प्रदान करती है उसे शुष्क एवं नीरज बुद्धि विलासी बनाने से बचाती है, भारतीय संस्कृति परंपराएं हमें भारतीय होने का एहसास कराती है। जो हमें विश्व के अन्य देशों से विकास की दौड़ में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करती है। भारतीय संस्कृति की अनेक परंपराएं ऐसी है जो सामाजिक जीवन को अधिक सदस्य एवं आत्मीय बनाए रखने में योगदान करती हैं क्यों ने हम स्वीकार करें कि प्रकृति ने हमें अपने अक्षय भंडार मानव के लिए संजो कर रखा है। आज आणविक और प्रौद्योगिकी को मानव कल्याण का साधन बनाने की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब मनुष्य बुद्धि के साथ प्रेम में जीवन जिए।

अतः आवश्यकता इस बात की है कि प्रारंभ से ही अच्छी आदतों संस्कारों एवं मानवीय मूल्यों की भावनाओं को समावेशित करने का प्रयास किया जाए मानवता की रक्षा और विकास के लिए पूरब पश्चिम का सम्मिलन आवश्यक है। कवि पंत का कथन चरितार्थ हो सकेगा मानव तुम सबसे सुंदरतम। ******

सुनीता राणा जिला उपाध्यक्ष सेवा भारती मात् मंडल धामपुर

पहले बात को सोचो, फिर मुंह से बोलो

"ऐसी वाणी बोलिए मन का आपा खोए, औरन को शीतल करे आपहुं शीतल होय।

मनुष्य के पास जुबान नाम का इतना तीखा धार दार हथियार है कि अच्छे से अच्छे को पराजित कर देता है ।यह बिना हड्डी की जबान जब बोलने लगती है तो शब्दों ही शब्दों में ही कईयों की हड्डियां तोड़ देती हैं। बात को बोलने से पहले सोचो, विचार करो,फिर बोलो। जैसे कमान से निकला तीर लौटकर नहीं आता है वैसे ही मुख से निकला हुआ वचन कभी वापस नहीं आता है। जानते हो - महाभारत क्यों हुआ? इसके पीछे भी महारानी द्रौपदी के व्यंगात्मक शब्द ही तो थे! शब्द क्या थे?

दुर्योधन के लिए उन्होंने बोला था --"अंधे का पुत्र अंधा"! और देखो, जवान के फिसलने से देखते ही देखते एक राजवंश नष्ट हो गया । बड़े से बड़े विद्वान पंडित संत पुरुष कहते हैं प्यारे! कम बोलो, धीरे बोलो और मीठा बोलो। हम जो शब्द और वचन अपने मुख से निकाले वह वचन दूसरों को कांटे की तरह चुभ कर घायल ना करें, बल्कि उसके चेहरे की प्रसन्नता का कारण बने ।समझदार व्यक्ति वही होता है जो पहले सोचता है, फिर बोलता है ।सही समय, सही जगह पर सही शब्दों का प्रयोग करना ही बोलने की कला है ।यदि हम ऐसा करते हैं तो न केवल हमारा मूल्य बढ़ेगा बल्कि हम सभी की हृदय में सम्मानित स्थान को प्राप्त कर सकेंगे ।

हमारे वचन हमारे चरित्र की पहचान होते हैं। वाणी एक अनमोल रत्न है ।मीठी वाणी बोल कर हम संसार पर विजय प्राप्त कर सकते हैं, वह भी बिना किसी वाद -विवाद और झगड़े के। जिसने मन को वश में कर लिया, सारे संसार को बस में कर लिया। कौवा और कोयल को तो हम सभी जानते हैं। आपने देखा होगा वह किसी का धन नहीं छीनता और कोयल किसी को धन देती नहीं है, किंतु कोयल अपनी मधुर बोली कुकू से सबके हृदय पर राज करती हैं। उसकी आवाज सबको अच्छी लगती है। कौवा जो कांव-कांव करता है, उसको कोई भी पसंद नहीं करता। हमें चाहिए, कोयल के समान अपनी वाणी में मिठास घोल कर सोच समझ कर बोलें। एक शब्द औषधि का काम करता है ,। एक शब्द हृदय में छुपकर घाव कर देता है । इसलिए हमें सोच समझकर बोलना चाहिए। ******

डा पूनम वशिष्ट
इंटर कालेज अनूपशहर, जिला बुलंदशहर

सेवा परमो धर्म

सेवा महान कार्य है। संसार के किसी भी क्षेत्र में सेवा की आवश्यकता होती है। क्योंकि सेवा का क्षेत्र बहुत व्यापक है। उसे देश और काल की सीमा में नहीं बांधा जा सकता। सेवा शब्द का शाब्दिक दृष्टिकोण से आकार में जितना छोटा है उसका अर्थ और भाव उतना ही महान है। रामचरितमानस में तुलसीदास जी ने सेवा के महत्व को दर्शाया है, सबते सेवक राम कटोरा,। त्रेता युग में भगवान श्री राम अपने भाई सहित गुरु विश्वामित्र जी के साथ वन में जाकर यज्ञ की रक्षा और ऋषि मुनियों की सुरक्षा करते हुए सेवा का दायित्व निर्वहन करते हैं। दशरथ पुत्रों की गुरु भक्ति, हनुमान जी का लक्ष्मण के स्वास्थ्य लाभ को लेकर सुसैन वैध को लाना, हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी लाना, पूरे युद्ध काल में युद्ध प्रबंधन आदि सेवा के अनूठे प्रसंग है।

द्वापर युग में महाराज युधिष्ठिर के राजसूर्य यज्ञ के व्रत आयोजन में द्वापर के महानायक भगवान श्री कृष्ण ने तो सेवा का अद्भुत परिचय दिया। राजसूय यज्ञ में जब सेवा के दायित्व को सौंपा जा रहा था तब श्री कृष्ण ने अपनी स्वेच्छा से जूते चप्पलों की रखरखाव और भोजन उपरांत सभी की झूठी पत्रों को उठाना और उन्हें फेंकना, यह सेवा कार्य स्वीकार की थी।

आज वर्तमान में सेवा भारती संगठन द्वारा भी सनातन धर्म के महान कार्य सेवा को निरंतर किया जा रहा है। जिस क्षेत्र में जिस प्रकार की आवश्यकता होती है उसी प्रकार की सेवा प्रबंधन जुटाई जाती है। अन्य क्षेत्र विद्या क्षेत्र संस्कार क्षेत्र चिकित्सा क्षेत्र विभिन्न कौशल क्षेत्र आदि अनेक उपक्रमों द्वारा सेवा के विभिन्न प्रकारों का विस्तार किया जा रहा है।

तकनीकी के इस युग में सेवा कार्यों में भी तकनीकी का प्रयोग भी बखूबी किया जा रहा है। ******

स्मरणीय दिवस

5 फरवरी संत रविदास जयंती
11फरवरीपंडितदीनदयाल उपाध्याय पुण्यतिथि
15 फरवरी स्वामी दयानंद सरस्वती जयंती
18 फरवरी महाशिवरात्रि
19 फरवरी छत्रपति शिवाजी जयंती
श्री गुरु जी जन्म दिवस
गोपाल कृष्ण गोखले जयंती
21 फरवरी फुलेरा दूज
23 फरवरी गाडगे महाराज जयंती
24 फरवरी लोकदेवता कल्ला जी राठौर बलिदान दिवस
27 फरवरी चंद्रशेखर आजाद बलिदान दिवस
चैतन्य महाप्रभु जयंती
28 फरवरी संत बाबूलाल प्रकट दिवस
3 मार्च लाला हरदयाल पुण्यतिथि
6 मार्च होलिका दहन
7 मार्च दुल्हनडी
8 मार्च विश्व महिला दिवस

गणगीत

दसों दिशाओं में जायें दल बादल से छा जायें
उमड़ घुमड़ कर हर धरती पर नंदनवन सा लहरायें ।।ध्रु।।
ये मत समझो किसी क्षेत्र को खाली रह जाने देंगें
दानवता का बेल विशैली कही नही छाने देंगे
जहां कही लूझुलसाती अम्रुत रिमझिम बरसाये।।1।।
फूल सुकोमल खेती पर हम बिजली नही गिराते है
किन्तु अडीले बालु अीले वर्षा में ढह जाते है
ध्वंस हमारा काम नही अविरल जीवन सरसायें।।2।।
मानव जीवन की स्वतन्त्रता नष्ट नही होने पाये
यंत्र व्यवस्था हृदयहीन में स्वत्व नही खोने पाये
जीवनस्तर का अर्थ न हम भोग डगर में भरमाये।।3।।
देश–देश के जीवन दर्शन अनुभव कहता पूर्ण नही
आदिसृष्टि से हिन्दु धर्म की पूर्ण धर्म उपलब्धि रहि
ग्यान किरण फिर प्रकटाये शांति व्यवस्था समझाये।।4।।

उत्तरमाला 1.चुकंदर 2.झाड़ू 3.जलेबी 4. दीया बत्ती

बच्चों का कोना

कुछ बूझो तो जाने

1. मैं रहता हूं काला का काला,
चाहे साबुन में मुझको धो लो
मैं रहता हूं मिट्टी के नीचे,
नाम मेरा है जट्ट बोलो।

2. जंगल में है मायका
गांव में है ससुराल
शहर आई दुल्हन
उठकर चला बवाल।

3. गोल गोल है चकरी
चकरी में है चक्कर
मुख बिना किसी के
पी गई है शक्कर

4. एक विचित्र चिड़िया है
तालाब किनारे रहती है
चौच है सुनहरी जगमग
बिना पूछ कर पानी पीती है

बोधकथा

जांबाज स्वयंसेवक को वीरता पुरस्कार

मध्यप्रदेश की व्यावसायिक राजधानी इन्दौर की एक छोटी सी कालोनी के किशोर 17 वर्षीय मनोज के इस साहसिक कारनामें के लिए उसे भारतीय बाल कलयाण परिषद नई दिल्ली द्वारा मरणोपरांत राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार हेतु चयनित किया गया तथा यह पुरस्कार 26 जनवरी 2007 को गणतंत्र दिवस पर प्रदान किया गया। 1 अगस्त 2005 को इन्दौर में आई भयंकर बाढ़ में शहर की अनेक निचली बस्तियां डूबने लगीं। मारूति नगर नामक एक गरीब बस्ती में अनेक बच्चे, बूढ़े, तथा जानवर डूबने लगे। ऐसे में मनोज ने 7 से 10 फीट गहरे पानी में डूबते लोगों को बचाने के लिए लकड़ी के लट्ठे, खाली टिन, कनस्तर, तथा हवा के ट्यूब इकट्ठे किये। इन्हे लेकर वह तैरकर पानी में जाता तथा डूबते लोगों को कनस्तर पकड़ाकर बचा लाता। यह कार्य वह सुबह 4 बजे से रात 12 बजे तक करता रहा। मनोज स्वयं दिल का मरीज था। चिकित्सकों ने उसे अत्याधिक श्रम करने से मना किया था परन्तु दूसरों के प्राण बचाने की लगन में उसने अपने प्राणों की परवाह न की। गंदे पानी की वजह से उसके फेफड़ों में संक्रमण हो गया साथ ही अत्यधिक श्रम की वजह से निमोनिया ग्रस्त हो गया और चार दिन बाद चल बसा।

17 वर्षीय मनोज राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा का मुख्य शिक्षक था। शाखा में प्रतिदिन गाए जाने वाले गीत ''देश हमे देता है सब कुछ, हम भी तो कुछ देना सीखें एवं तन समर्पित, मन समर्पित और यह जीवन समर्पित, चाहता हूँमातृभू तुझको अभी कुछ और भी दूं'' विशेष रूप से प्रिय थे। संघ में उसे दूसरों के हित में तथा राष्ट्र हित में हँसी–खुशी प्राण तक न्यौछावर करने की प्रेरणा मिली थी। मरते वक्त उसकी जेब से प्राप्त कागजों में बस्ती के लोगों की आवश्यकता की सूचियां मिली, अर्थात् वह अंत समय तक परहित की चिंता ही करता रहा। इस वीर बालक के शहीद होने पर बस्ती में तीन दिन तक चूल्हे नही जले, बस्ती का हर व्यक्ति करूण रूंदन करता रहा था। यह था उसकी वीरता का जज्बा। ***

स्वत्वाधिकारी सेवा भारती मेरठ प्रांत द्वारा प्रकाशित मासिक समाचार दर्शन, प्रचार विषय पालक आलोक अग्रवाल 7017518707 द्वारा मुद्रित सेवा भारती सेवा धाम अपेक्स सिटी बागपत रोड मेरठ द्वारा प्रकाशित